फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 189 मार्च 2004

कहत कबीर
गहरे- दीर्घ- व्यापक
सम्बन्धों के लिये
समय- समय- समय
चाहिये ही चाहिये।

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (7)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने- फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं — जब- तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत- ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ★ सहज- सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार- स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर- माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड- भाट- चारण- कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग- रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना- उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर- माथों वाले पिरामिडों के ताने- बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना- रूपी बातें करते हैं। ★ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ★ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ★ हमें लगता है कि अपने- अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल- उबाऊ- नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच- नीच के स्तम्भों के रंग- रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर- माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ★ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन- मस्तिष्क में अक्सर कितना- कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत- ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

★ किसान-मजदूर-दुकानदार 60 वर्षीय: गर्मी- सर्दी- बरसात, सब ऋतुओं में हम मियां- बीबी सुबह चार- साढे चार बजे उठते हैं। फारिग हो कर 5 बजे लड़कियों को उठाते हैं — एक ही बेटा है, बड़ा है, शादी के बाद न्यारा रहता है।

लड़कियाँ पढती हैं, पढाती हैं, फैक्ट्री में नौकरी करती हैं। बड़ी लड़की चटपट उठ कर चाय और रोटी बनाती है। आपस में तय कर रखा है कि कोई उठने में देरी करे तो पानी के छींटे मारो। पत्नी और मैं साढे पाँच बजे नाश्ता कर पौने छह- छह मण्डी के लिये चल देते हैं। मैं पत्नी को साइकिल पर ले जाता हूँ। लड़कियाँ स्वयं तैयार हो कर स्कूल जाती हैं, काम पर जाती हैं।

सुबह- सवेरे ही घर- गृहस्थी की बातें शुरू हो जाती हैं। लड़कियों का ब्याह हमारे मन- मस्तिष्क पर छाया हुआ है। एक का विवाह सिर पर है। ब्याह- शादी में दिखावट- झूठ- फरेब तो मण्डी को भी मात कर जाते हैं — सम्बन्ध क्या खाक बनेंगे, बस अपना बोझ उतार देने वाली बात है। गया वह जमाना जब बहनों की जिम्मेदारी भाइयों पर भी होती थी — अब तो माँ- बाप को ही बेटियों की शादियाँ करनी हैं।

सवा छह तक मण्डी में पहुँच कर पत्नी और मैं मण्डी में घूमते हैं। जायजा लेते हैं और तय करते हैं कि कौनसी सब्जी खरीदें। सुबह- सुबह आढतियों के मुनीम बोली लगाते हैं। डबुआ सब्जी मण्डी में 500 आढतिये होंगे और रोज दस हजार के करीब रेहड़ी वाले सब्जी- फल खरीदते हैं। बारह वर्ष पहले नौकरी से निकाले जाने पर मैंने भी रेहड़ी पर सब्जी बेचनी शुरू की थी। पत्नी और मैं रेहड़ी ले कर डोलते थे — बहुत ज्यादा मेहनत का काम है। पत्नी बीमार हो गई — पूरी तरह ठीक हुई ही नहीं है तब से। हम ने रेहड़ी चलाना छोड़ कर सब्जी मण्डी में ही जमीन पर सब्जी लगा कर रेहड़ी वालों व फुटकर खरीददारों को बेचना शुरू किया। ऐसा करने लायक बनने के लिये हमें बहुत पापड़ बेलने पड़े और हमारे जैसे भी मण्डी में 500 लोग हैं। बोली बहुत- ही सोच- विचार कर लगानी पड़ती है अन्यथा मेहनत के संग घाटा उठाने की नौबत आ जाती है। जब- तब किसी आढतिये के जमा माल को निकलवाने में भी अपने पैसे बनाने की गुंजाइश बन जाती है।

7 बजे तक हम सब्जी खरीद लेते हैं। धो- पौंछ कर सब्जी लगाते हैं। पत्नी अनपढ है — मैं आढतियों से हिसाब- किताब करता हूँ। खरीददारों से भाव को ले कर झिक- झिक होती है और यह ज्यादातर पत्नी को झेलना पड़ता है। मण्डी में सब बेचने- खरीदने में व्यस्त रहते हैं — बातचीत के लिये कोई गुंजाइश नहीं होती। 9 बजे बाद बिक्री ढीली पड़ जाती है। तब मैं वहाँ से निकल जाता हूँ अथवा वहीं फालतू टहलता हूँ और थोड़ा गप- सड़ाका करता हूँ। पत्नी एक बजे तक मण्डी में बैठती है। दो पैसे की बचत के चक्कर में मण्डी में पत्नी और मैं एक कप चाय तक नहीं पीते।

पत्नी को मण्डी में ही छोड़, कभी मैं घर पहुँच जाता हूँ। आटे- दाल, कपड़े- लत्ते, कापी- किताब का प्रबन्ध करता हूँ। लड़कियों के विवाह की चिन्ता ने इधर नाते- रिश्तेदारों के संग उठ- बैठ बढाई है। एक बजे मण्डी लौट कर पत्नी को साइकिल पर घर लाता हूँ। नहा- धो कर फिर हम भोजन करते हैं। सब्जी बच गई तो दुबारा 4 बजे पत्नी को मण्डी छोड़ कर आता हूँ और माल निकालने में रात के 9- 10 तक बज जाते हैं। काँटा- बाट बाँध- बूँध कर फिर मैं पत्नी को ले कर आता हूँ। रात का खाना बच्चे बना कर रखते हैं — खाना खाने में 11 बज जाते हैं। टी. वी. थोड़ी देर दोपहर को और थोड़ी देर रात को।

कोर्ट-कचहरी

महीने में मेरे 15 दिन तो अदालतें खा रही हैं और इस सिलसिले को दस वर्ष से ज्यादा हो गये हैं।

कुशल कारीगरों के लिये सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन कम्पनी नहीं दे रही थी। अन्य सहकर्मियों के संग मैंने भी इस बारे में पहले यूनियन को और फिर मैनेजमेन्ट को कई बार कहा। दोनों पर कोई असर नहीं पड़ने पर हम मजदूरों ने श्रम विभाग में शिकायतें की। सरकारी अधिकारियों की टाल- मटोल और हेराफेरियाँ मामले को रफा- दफा नहीं कर पाई तब यूनियन और मैनेजमेन्ट ने आधे- अधूरे ढँग से कानून लागू किया। फिर उन्होंने अपनी जकड़ बनाये रखने के लिये कुछ मजदूरों को नौकरी से निकाला जिनमें मैं भी था। कम्पनी के गैर- कानूनी कार्यों की सरकार के हर स्तर पर मैंने शिकायतें की, प्रधानमन्त्री- राष्ट्रपति तक को शिकायतें की हैं। पीछे पड़ा रहा हूँ....

श्रम विभाग में तारीखें। फिर लेबर कोर्ट में तारिखें। कम्पनी संचालित स्कूल द्वारा बेटियों की पढाई में रुकावट डालने पर उपभोक्ता फोरम में जिला, प्रान्त और राष्ट्रीय स्तर तक तारीखें। और अब न्यायालयों में कम्पनी पर दायर सिविल व आपराधिक मामलों में तारीखें। कह सकते हैं कि बिना डिग्री किये मैं खुद अच्छा- खासा वकील बन गया हूँ। केस को लम्बा खींचने के अनेकानेक तरीके हैं....कहाँ तक कोई मजदूर चक्कर काटेगा (काटेगी)। बोलने पर अदालत की मानहानि की धमकी- सजा का प्रावधान! सरकारी कार्यालय —न्यायालय से कोई कागज निकलवाना हो तो फीस के अलावा 20- 50- 100 रुपये **(बाकी पेज तीन पर)**

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37–40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7–10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगनी दर से; ●हरियाणा में अकुशल श्रमिक-हैल्पर की कम से कम दिहाड़ी 84 रुपये 53 पैसे और सप्ताह में एक छुट्टी व 8 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर महीने में अकुशल श्रमिक-हैल्पर की कम से कम तनखा 2197 रुपये 84 पैसे;●....*जनवरी-जून 03 का डी.ए. सरकार ने शून्य घोषित किया और जुलाई-दिसम्बर 03 का डी. ए. सरकार ने 2मार्च 04 तक घोषित ही नहीं किया है।*

कन्सोलिडेटेड कोयन मजदूर : "13/2 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री पर पहले **नैपकोन टरबो चार्जर** का नामपट्ट था। फैक्ट्री में 10 साल से लगातार काम कर रहे वरकर हैं पर एक का ही प्रोविडेन्ट फण्ड है – बाकी 90 में से किसी को भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी कोरे वाउचर पर हस्ताक्षर करवाती है। फैक्ट्री में 10 घण्टे की ड्युटी है और इसके बदले में 2000 रुपये महीना देते हैं। दस घण्टे बाद भी जबरन रोकते हैं और उसे ओवर टाइम कह कर सिंगल रेट से उसके पैसे देते हैं।"

सुपर स्क्रूव्ज वरकर : "प्लॉट 30 और 96 सैक्टर-24 स्थित कम्पनी में 500 मजदूर काम करते हैं – आधे दो ठेकेदारों के जरिये रखे गये हैं। कम्पनी में ओवर टाइम काम पर बहुत ज्यादा जोर है – 32 घण्टे लगातार काम करना पड़ जाता है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैंटीन नहीं है। निकाल देने के बाद एक ठेकेदार पी.एफ. फार्म भरने में बहुत परेशान करता है और दूसरे ठेकेदार ने पी.एफ. व ई.एस.आई. लागू ही नहीं किये हैं तथा हैल्परों को 1700-1800 रुपये महीना तनखा देता है।"

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "प्लॉट 48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में आधे से ज्यादा वरकर फेटलिंग व क्वालिटी विभागों में हैं और रोज 12 घण्टे काम करना पड़ता है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल दर से, कुछ को सवा की दर से भी। कम्पनी 6 महीने एक ठेकेदार के खाते में और फिर 6 महीने दूसरे ठेकेदार के खाते में मजदूर को दिखाने का सिलसिला चलाये हुये है। बोनस नहीं, अर्न्ड लीव नही, कैजुअल छुट्टी नहीं।"

शुभम् पैकिंग वरकर : "प्लॉट 60 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

क्लच आटो मजदूर : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 10 फरवरी को जनवरी की तनखा कुछ वरकरों को दी। उसके बाद आज 19 फरवरी तक जनवरी की तनखा बाकी मजदूरों को नहीं दी है।"

सागर शूज वरकर : "सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 97 मजदूरों में से 90 की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं थी। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तीन जनवरी को रात की शिफ्ट में मैनेजिंग डायरेक्टर भारत गुप्ता दो लोगों के साथ आया और ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले एक मजदूर की पिटाई की। फिर उससे तथा एक अन्य ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले वरकर से जबरन कागजों पर दस्तखत करवाये। चार जनवरी को सागर शूज कम्पनी ने ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले सातों मजदूरों को फैक्ट्री से निकाल दिया। हम ने श्रम विभाग में शिकायत की है।"

सुलभ इन्टरनेशनल मजदूर : "जनवरी का वेतन हमें 20 फरवरी को जा कर दिया। ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। एक दिन की छुट्टी करने पर एक रविवार उड़ा देते हैं। मुख्यमन्त्री के दौरे के वक्त रविवार को भी हम से काम करवाते हैं पर ओवर टाइम नहीं देते।"

चारू इलेक्ट्रिकल्स वरकर : "प्लॉट 11 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को 1400 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जनवरी की तनखा आज 19 फरवरी तक नहीं दी है।"

गुडईयर टायर वरकर : "फैक्ट्री में 15-20 ठेकेदार हैं और मजदूरों से मुन्शी 50-100 रुपये महीना रिश्वत लेते हैं। जिस ठेकेदार के जरिये गुडईयर कम्पनी ने हम 250 मजदूरों को भर्ती किया है उसने जनवरी की तनखा हमें कल, 20 फरवरी को जा कर दी।"

आहूजा जनरल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की ड्युटी है। रोज 12 घण्टे काम के बदले महीने में 1800 रुपये देते हैं और जनवरी के वे भी आज 13 फरवरी तक नहीं दिये हैं। जनवरी में अधिकारियों ने फैक्ट्री पर छापा मारा था।"

सुपर फाइबर वरकर : "57 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सूतली बनती थी और दस-दस घण्टे की दो शिफ्ट थी। इधर फैक्ट्री में बोरी भी बनने लगी हैं – रात की शिफ्ट तो 10 घण्टे ही है पर दिन की ड्युटी 12 घण्टे कर दी गई है। रविवार को भी दिन में 12 घण्टे काम करना पड़ता है – सप्ताह में शिफ्टें बदलती हैं इसलिये रविवार को रात में काम बन्द रहता है।"

नमो फोरजिंग मजदूर: "प्लॉट 87 संजय कालोनी, सोहना रोड़ स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1400 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कोरे कागजों पर दस्तखत करवाते हैं। फैक्ट्री में लैट्रीन नहीं है, पीने के पानी का इन्तजाम भी नहीं है। तनखा 25 तारीख के बाद जा कर देते हैं।"

एस्कोर्ट्स आटोकम्पोनेन्ट्स वरकर : "कैजुअल वरकरों द्वारा किये 300 घण्टे ओवर टाइम के पैसे कम्पनी ने नहीं दिये हैं। जिन्हें निकाल दिया है वे अपने पैसों के लिये चक्कर काट रहे हैं। दिसम्बर और जनवरी की तनखायें हमें आज 17 फरवरी तक नहीं दी हैं।"

न्यू एलनबरी मजदूर : "14/7 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम कैजुअल वरकरों को बहुत गालियाँ देते हैं और हम से बैलों से भी ज्यादा काम लेते हैं। हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं, हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड भी नहीं है। महीने की तनखा 1965 रुपये देते हैं – जनवरी का वेतन 16 फरवरी को जा कर दिया। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

श्याम टैक्स इन्टरनेशनल वरकर: "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हौजरी विभाग में कम्पनी ने स्वयं मजदूर भर्ती किये हैं और 8 घण्टे प्रतिदिन पर हैल्परों की 1642 रुपये महीना तनखा लगाई है तथा 4 घण्टे रोज जो ओवर टाइम काम करना पड़ता है उसके पैसे तनखा के सिंगल रेट से। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं – कम्पनी अधिकारी कहते हैं कि फैक्ट्री को अभी निर्माणाधीन दिखा रखा है। रिलीवर नहीं आता है तो 36 घण्टे लगातार ड्युटी करनी पड़ती है। सिन्थेटिक विभाग में कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये वरकर रखे हैं और हैल्परों को 12 घण्टे प्रतिदिन के बदले महीने के 2200 रुपये देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। डाइंग विभाग में रसायनों की भारी बदबू रहती है और हाथ फट जाते हैं।"

सेक्युरिटी गार्ड : "नीलम-बाटा रोड़ पर सिंडिकेट बैंक के पास **एक्स आर्मी जी-7 सेक्युरिटी सर्विसेज** का दफ्तर है। यह ठेकेदार भी गार्डो से रोज 12 घण्टे की ड्युटी लेता है – न साप्ताहिक छुट्टी, न त्यौहारी छुट्टी। वेतन में से 400-500 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटते हैं पर न ई.एस.आई. कार्ड, न ही पी.एफ है।"

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान	मजदूर लाइब्रेरी आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद–121001
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2004 हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (पेज एक का शेष)

रिश्वत जरूरी है। और, रिश्वत के बाद एक कागज के लिये मजदूर को कई चक्कर लगाने पड़ते हैं। वकील खुद रिश्वत देने को बोलते हैं। और, जज कहते हैं कि स्वयं केस मत लड़ो, वकील कर लो। पहले तो केस के बारे में वकील बड़ी- बड़ी लच्छेदार बातें करते हैं और चुटकियों में जिताने के दावे करते हैं परन्तु फिर बरसों केस चलता है।

सात वर्ष कसरत करवाने के बाद श्रम न्यायालय ने मेरे पक्ष में फैसला सुनाया। पत्नी के बल पर मैं इतने समय टिका रह सका। लेकिन ... लेकिन कब तक टिका रहूँगा? श्रम न्यायालय के फैसले को भी चार साल हो गये हैं पर मुझे एक पैसा तक कम्पनी से नहीं मिला है। हम मियां- बीबी में दस- बीस के खर्च पर खटपट बढ गई है। पहले बहू से और फिर बेटे से खटपट का नतीजा बहू- बेटे के अलग रहने में हुआ। लड़का जब- तब कुछ पैसे देता है।

केस जीतने के बाद उम्मीद बनी थी पर अब पैसे मिलना बहुत दूर दिखता है। इस दौरान फैक्ट्री बन्द हो जाने के कारण भी कुछ ज्यादा ही भागदौड़ मुझे करनी पड़ रही है। मैनेजमेन्ट को काबू में करने के लिये मैंने कई केस भी दायर कर दिये हैं। लेकिन मेरी ताकत कम होती जा रही है। कहीं नौकरी करने लायक अब मैं रहा नहीं। कामधाम अब पत्नी के भी बस का नहीं रहा। सब्जी मण्डी में वैसे भी सब छोटों के लिये कमाई बहुत कम हो रही है। दिमाग किसी एक स्थाई जगह रुक नहीं रहा।

सोचता रहता हूँ.....

कुछ कर गुजरने की तमन्ना मन में बचपन से ही रही है। पीछे की बातें ..... गाँव में थोड़ी खेती थी। स्कूल में अध्यापक डाँटते- पीटते थे। सहपाठियों के संग मिल कर अन्धेरे में प्रधानाचार्य की पिटाई की और फिर पकड़े जाने के डर से हम गाँव के लोगों के पास कलकत्ता भाग गये। ट्रकों में माल लादने- उतारने के लिये ट्रकों में यहाँ से वहाँ जाने में हमें मजा आया। मैं 15 वर्ष का भी नहीं हुआ था – पिता जी मुझे कलकत्ता से वापस घर ले गये। कुछ समय इधर- उधर घूमा और खड्डी पर कपड़ा बुनना सीखा। फिर परिचितों के पास बम्बई चला गया और बन्दरगाह में ट्रकों पर माल चढाने तथा अलग-अलग जगह जा कर उतारने का काम करने लगा। लेकिन काम कम मिलता था। ऐसे में परिचितों ने मुझे भिवंडी में कपड़े बुनने का काम करने भेजा। वहाँ मुझे थोड़े ही दिन हुये थे कि दँगा हो गया। मैं रोटी का डिब्बा लिये काम के लिये जा रहा था कि पुलिस ने पकड लिया। कोई जमानती नहीं था इसलिये मैं तीन महीने बम्बई की थाणे जेल में बन्द रहा।

जेल से छूटने पर फरीदाबाद आया। रिश्तेदार ने यहाँ जूट मिल में मुझे लगवा दिया पर वहाँ के भारी धूल- गर्दे के कारण मैंने नौकरी छोड़ दी और कपड़ा मिल में लग गया। कपड़ा मिल में 25 साल ....

जमीर ऐसा रहा है कि मन मार कर सहन कम ही किया है। समाज में एक स्थान बनाये रखने की कोशिश की है। कुछ ज्यादा ही बोलता हूँ – कोशिश करने पर भी रुक नहीं पाता। बहुत कम लोगों के साथ पटरी बैठी है। दैनिक जीवन में लोग जैसे रह रहे हैं इसमें मुझे घुटन होती है। दोस्ती बनती ही नहीं – बस थोड़ी उठन- बैठन और बात कह- सुन लेना होता है। कोशिश करता हूँ कि मेरे से कभी कोई गलती न हो।

पत्नी और मैं तो बेइन्तहा खट ही रहे हैं, हमारी बेटियाँ भी पढने- पढ़ाने- नौकरी- घर के काम के बोझ तले दबी हैं। मैं 60 साल का हो रहा हूँ और पत्नी बीमार भी रहती है। लड़कियों की शादियाँ हो जायें .... अगर केस वाले पैसे मिल जायें तो गाँव में जा कर कुछ जमीन खरीदूँ – कुछ है, कुछ खरीद कर जमीन से बुढापा गुजारूँ। (जारी)

अनुभव-विचार-चिन्तन-मनन

फरीदाबाद गैस गैजेट्स मजदूर : "प्लॉट 137 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री 1988 से बन्द है। कम्पनी में 150 मजदूर और 100 स्टाफ वाले काम करते थे। 16 साल बाद भी किसी को हिसाब नहीं मिला है। कम्पनी ने 1985- 88 का 3 साल का हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड भी जमा नहीं किया है। नवजीत सूद और हरप्रसाद चन्दा कम्पनी के डायरेक्टर थे। कम्पनी लिक्वीडेशन में है और 37 लाख रुपये में मशीनें बिकी हैं।"

ग्लोब कैपेसिटर वरकर : "23 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में फरवरी के आरम्भ में भविष्य निधि वालों ने छापा डाला। कम्पनी ने कैजुअल वरकरों को स्टोर में बन्द कर दिया। पी. एफ. वाले काफी समय तक कम्पनी का रिकार्ड देखते रहे। सिर्फ 65 मजदूरों का प्रोविडेन्ट फण्ड में नाम था। ग्लोब कैपेसिटर में हर रोज साढे दस घण्टे की ड्युटी और उसके बाद 2 घण्टे ओवर टाइम के पश्चात रात साढे आठ बजे मजदूर फैक्ट्री से निकलते हैं पर छापे वाले दिन मैनेजमेन्ट ने साढे चार बजे ही छुट्टी कर दी। उस समय पी. एफ. वाले गेट पर खड़े थे और उन्होंने बड़ी सँख्या में मजदूरों को फैक्ट्री से निकलते देखा पर किसी मजदूर से कुछ नहीं पूछा। पी.एफ. वालों के साथ कम्पनी का एक ज्यादा हेरा- फेरी करने वाला अफसर भी खड़ा था। छापे के अगले दिन मैनेजमेन्ट ने 65 के अलावा 18 अन्य मजदूरों पर पी.एफ. प्रावधान लागू कर दिया। फैक्ट्री में 250 मजदूर काम करते हैं। इन्डस्ट्रीयल एरिया में ही ग्लोब कैपेसिटर का नया चमचमाता प्लान्ट बन गया है।"

बिनके टैक्सटाइल्स मजदूर : "प्लॉट 32 ई 38 संजय कॉलोनी, सैक्टर- 23 स्थित फैक्ट्री में 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। बेलदारी का हिसाब है – कोई भी छुट्टी नहीं है। फैक्ट्री में 40 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 8 के ही हैं। 14- 15 साल के बच्चे भी फैक्ट्री में काम करते हैं। हैल्पर को 8 घण्टे पर 30 दिन के 1200 रुपये और ऑपरेटर को 1500- 2000 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय तक नहीं देती। चोट लगने पर इलाज के लिये जो 50- 100 रुपये देते हैं वह तनखा में काट लेते हैं। एक ऑपरेटर 2 मशीन चलाता है – तीन, चार मशीन चलाने के लिये दबाव डालते हैं। बस काम चाहिये। डायरेक्टर विनोद बन्सल तो रात को दारू पी कर आता है और मामुली गलती पर मजदूर की पिटाई कर देता है। पुलिस वाले फैक्ट्री में आते रहते हैं और कम्पनी की सेक्युरिटी की तरह व्यवहार करते हैं।" (बाकी पेज चार पर)

सी.एम.आई. वरकर : "प्लॉट 71 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री लड़खड़ा रही है। कीमत हम मजदूरों से वसूली जा रही है। मई 02 से छँटनी

मृत्यु–हत्या के मुहाने

स्टारवायर मजदूर : "21/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 9 फरवरी को एक और मजदूर की मृत्यु हो गई। डेढ वर्ष से स्टारवायर फैक्ट्री में काम कर रहे 19 वर्षीय विक्रम को मैनेजमेन्ट ने 40- 45 फुट ऊँचे शेड पर चढा कर लोहे की टूटी चद्दरें बदलने के काम में लगाया। पैर फिसलने से विक्रम ऊँचाई से मशीनों पर गिरा। सिर में गम्भीर चोट लगी – अस्पताल में विक्रम की मृत्यु हो गई।

"करीब डेढ महीने पहले स्टारवायर में शेड के ऊपर लोहे का एंगल रस्सी से खींचा जा रहा था। रस्सी टूट गई। नीचे खड़े मजदूर पर लोहे का एंगल गिरा। उस मजदूर की मृत्यु हो गई।

"तीन- चार महीने पहले पिघले लोहे को साँचे में ढालने के लिये तिपहिये में ले जाते समय तिपहिये का एक पहिया जमीन में धँस गया। पिघले लोहे ने एक मजदूर को 80 प्रतिशत जला दिया– अभी तक अस्पताल में भर्ती है।

"तीन- चार महीने पहले ही एक मजदूर पर ऊँचाई से कच्चा माल गिरा। वरकर की कमर की हड्डी टूट गई और उसका एक पैर काटना पड़ा है। वह मजदूर भी अभी अस्पताल में है।

" स्टारवायर फैक्ट्री कभी ग्लोब स्टील के नाम से जानी जाती थी। यहाँ लोहे की ढलाई, फौज व पुलिस के लिये बुलेट प्रूफ जैकेट व मैटल मोर्चा, फौज- रेलवे- निर्यात के लिये मोटा सरिया आदि का उत्पादन कार्य होता है। फैक्ट्री में मात्र 50- 60 परमानेन्ट मजदूर हैं और 20- 25 ठेकेदारों के जरिये कम्पनी ने 1500- 1600 वरकर रखे हैं।

"9 फरवरी को मरा मजदूर अखबार में खबर बन गया – पुलिस ने ठेकेदार व मैनेजमेन्ट के खिलाफ लापरवाही से मौत का मामला दर्ज किया है। कहते हैं कि स्टारवायर का मैनेजिंग डायरेक्टर बहुत धार्मिक प्रवृति का है – 9 फरवरी को मरे मजदूर के नाम पर फैक्ट्री में कार्य करते सब मजदूरों की तनखा में से 30- 30 रुपये कम्पनी ने काट लिये हैं।"

एस.पी.एल. वरकर : "प्लॉट 39 सैक्टर- 6 में एस.पी.एल. का नया प्लान्ट बन रहा है। यहाँ 16 फरवरी को दिन में 11 बजे के करीब एक मजदूर को कार्य करते समय बिजली के झटके लगे। मजदूर की मृत्यु हो गई। लीपापोती कर मामला रफा- दफा कर दिया गया है।"

उँगली पे कंकड़

ब्रॉन लैबोरेट्री मजदूर : " 13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में तनखा देरी से देने का सिलसिला कम्पनी ने चला रखा है। दिसम्बर का वेतन नहीं दिये जाने पर 22 जनवरी को हम मजदूरों ने 4 घण्टे काम बन्द किया। इसका असर यह भी पड़ा है कि मैनेजमेन्ट ने जनवरी की तनखा हमें 9-10 फरवरी को दे दी।"

ललित फैब्रिक्स वरकर : " 13/6 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री 1994 से बन्द है। बरसों बीत जाने पर भी कम्पनी ने हमारा हिसाब नहीं दिया। आखिरकार हम ने अपनी समस्या को मजदूर समाचार व अन्य अखबारों के जरिये चर्चा में लाया। इस पर मैनेजिंग डायरेक्टर बोला कि मेरी बेइज्जती करते हो ! लेकिन हम ने अपना हिसाब ले लिया है !! अब कम्पनी द्वारा 2 साल का हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड जमा करना बाकी है।"

टट्टी पे ताला

अरिहन्त इलेक्ट्रिकल मजदूर : "प्लॉट 88 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में लैट्रीन के ताला लगा कर रखती है मैनेजमेन्ट और 11 बजे से पहले चाबी नहीं देती! फैक्ट्री में सुबह 8 से रात साढे आठ बजे तक साढे बारह घण्टे की एक शिफ्ट है– कभी रात साढे दस तक रोक लेते हैं। फैक्ट्री में 71 मजदूर और 20 स्टाफ के लोग हैं। लैट्रीन का ताला मैनेजमेन्ट 11 बजे खोलती है और साढे ग्यारह बन्द कर देती है! भोजन अवकाश के समय आधा घण्टा लैट्रीन का ताला खोल कर फिर लगा दिया जाता है। उसके बाद ढाई बजे तक माँगने पर भी लैट्रीन की चाबी नहीं दी जाती। ढाई से साढे सात के बीच माँगने पर लैट्रीन की चाबी मैनेजमेन्ट देती है ! हैल्परों को कम्पनी 1500 और ऑपरेटरों को 1800 रुपये महीना तनखा देती है। ई.एस.आई. व पी.एफ. तीस प्रतिशत मजदूरों के हैं, बाकी के नहीं। कम्पनी बोनस देती ही नहीं।"

अनुभव-विचार....

(पेज तीन का शेष)

आरम्भ है – 300 परमानेन्ट वरकरों में से अब 85 ही बचे हैं। छँटनी पर कानूनन न्यूनतम देय भी कम्पनी नहीं दे रही। मनमर्जी से बनाये हिसाब को भी मैनेजमेन्ट लटका रही है – जुलाई 03 में निकाले 22 मजदूरों में से 10 को ही अब फरवरी में जा कर चेक दिये हैं। फरवरी 03 से कम्पनी हमारी पी.एफ. व ई.एस.आई. राशि जमा नहीं कर रही। फरवरी 03 में वेलफेयर सोसाइटी समाप्त कर दी पर वर्ष-भर बाद भी उसमें लगा हमारा पैसा नहीं दिया है। डी.ए. देना 02 के आरम्भ से बन्द है और वर्दी-जूते 01 से नहीं दिये हैं। वार्षिक वेतन वृद्धि 02 से नहीं दी है। दिसम्बर और जनवरी की तनखायें आज 21 फरवरी तक नहीं दी हैं। पहले कम्पनी का एम.डी. भरत चौधरी था, अब अमित जैन है।"

बन्दी वाणी (8)

[अमरीका सरकार ने "अपने" बीस लाख लोगों को सजा दे कर और आठ लाख को विचाराधीन कैदी के रूप में बन्दी बना रखा है। यूँ तो सम्पूर्ण संसार ही जेलखाने में ढाल दिया गया है, अधिकाधिक ढाला जा रहा है, फिर भी, सरकारों के कारागारों में बन्द हमारे बन्धुओं पर जकड़ हम से अधिक होती है। अनुवाद की और सन्दर्भों की दिक्कतों के कारण यहाँ हम अपने शब्दों में अमरीका सरकार के कैदखानों में बन्द लोगों की वाणी को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।]

आपराधिक माहौल में पले युवा जब अपराध करते हैं तो उन्हें अपराध अक्सर बहुत मजेदार लगता है। समाज-स्वीकृत आक्रामकता वाली संस्कृति में पले युवाओं का विश्व में अधिकतम हिंसक प्रवृति का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिये। 1992 के एक अध्ययन अनुसार अमरीका में " हर 3 घण्टे में एक बच्चे की हत्या होती है" और " प्रत्येक 13 सैकेण्ड में एक बच्चे से दुर्व्यवहार की शिकायत दर्ज।" एक अन्य अध्ययन ने अमरीका के फिलाडेल्फिया प्रान्त में 1996-99 के बीच हुई हत्याओं में पाया कि 63 प्रतिशत हत्यायें 6 से 24 वर्ष के युवाओं ने की थी।

नई पीढी की कई बातें मुझे बहुत गहरी और मुक्तिदायी लगती हैं। ऐसी ही बात मुझे उस युवती की लगी जिसने दुनियाँ-भर में हिंसा की खुली-भद्दी और महीन-छिपी घटनाओं में से कइयों को अकेलेपन के बढते अहसास का परिणाम बताया।

बहुत समय से जेल में चिन्तन-मनन करता मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि अमरीका में समाज में हर स्तर पर होती हिंसा, लालच, और आक्रमण तो लक्षण हैं। यह इन्सानों को मिलते अपर्याप्त प्यार और सतही महत्व दिये जाने के लक्षण हैं। प्रेम-विश्वास-हमदर्दी को दबाने और धन-सत्ता-होड़ के जरिये आदर प्राप्त करने की घुट्टी पिलाई जा रही है। भौतिक सम्पदा व प्रतिष्ठा के लिये आक्रामकता इस समाज को गतिशील रखे है। सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति के लिये आक्रमण को मुख्य साधन मानने वाले समाज में प्रेम, हमदर्दी, सामाजिक चेतना शहीद होते हैं। बाहुबल, बुद्धिबल, धनबल और राजनीतिक आक्रमण के संग होड़-प्रतियोगिता की जुगलबन्दी है। यह जुगलबन्दी अविश्वास भरा और भावनाहीन माहौल पैदा करती है। ऐसे में सामाजिक टकराव उत्पन्न होते हैं और बदहवास अकेलेपन को जन्म देते हैं।

प्रतियोगिता-कम्पीटीशन को अमरीका में बहुत महत्व दिये जाने का सरसरा परीक्षण भी बढती आक्रामकता वाले अनैतिक समाज को उजागर करता है। इस समाज में सच्चा प्रेम और हमदर्दी हैं ही नहीं। हर स्तर पर शिक्षक प्रतिस्पर्धी आक्रामकता को प्रोत्साहित करते हैं, सफलता के एकमात्र कारगर सूत्र के तौर पर होड़ की वकालत करते हैं। पदों के लिये कम्पनियाँ कर्मचारियों से आक्रामक होड़ की अपेक्षा करती हैं। कम्पनियाँ स्वयं मण्डी विशेष में दबदबे के लिये घातक युद्धों में रत रहती हैं।

सड़क पर फूटता गुस्सा, मुकदमे, तलाक के लिये अदालती युद्ध, बच्चों द्वारा देखी-भुगती जाती अनन्त घरेलू हिंसा तो मात्र चन्द उदाहरण हैं इस बात के कि होड़-प्रतियोगिता को महत्व दिये जाने के परिणामस्वरूप वर्तमान में अमरीका में टकराव और आक्रामकता कितने व्यापक बन गये हैं। वास्तविक जीवन में हिंसा, आक्रामकता, यौन दुराचार, नैतिक पतन के संग-संग इन्हें फिल्मों, विडियो गेमों और लगभग हर अन्य सार्वजनिक माध्यम से परोसा जाता है। वास्तविक और चित्रित की यह जुगलबन्दी पूरे समाज में यह बैठाने में लगी है कि सिर्फ सक्षमतम ही बचते हैं। परस्पर फलदायी सहकारी प्रयास भी भौतिक लक्ष्य की प्राप्ति में सिकोड़े जा रहे हैं और सामाजिक सौहार्द की बात ही गायब की जा रही है।

कई प्रख्यात विद्वानों द्वारा यह दलील दी गई है कि अमरीका में कम आमदनी वाली शहरी आबादियों में जो इतने व्यापक अपराध व हिंसा हैं वे विश्व स्तर पर कम्पनियों व अमरीका सरकार के अपराध और हिंसा के प्रतिबिम्ब हैं।

मान्य जनों से समर्थन, स्वीकार्यता और स्थान पाने के लिये आक्रामकता को एक औजार के तौर पर इस्तेमाल किये जाने वाली अबुझ पहेली भी है। एक वकील जो अदालत में आक्रामक नहीं है उसे अन्य वकील कमजोर व नाकारा के तौर पर लेंगे। कई गरीब बस्तियों में जिन्दा रहने के लिये आक्रामकता को आवश्यक माना जाता है। परस्पर टकरावों में शारीरिक और शाब्दिक हिंसा के प्रयोग के लिये भारी सामाजिक दबाव होता है।

अमरीका में समाज में हर स्तर पर आक्रामक व्यवहार को पुष्ट किया जा रहा है। हिंसक और आक्रामक व्यवहार द्वारा उत्पन्न भावनायें अक्सर नशे के समान होती हैं। आज हँसी से प्यार की बजाय हम बहस करने से ज्यादा प्यार करते हैं। आज हम डर, आश्चर्य, उत्तेजना को शान्ति और सौहार्द से अधिक पसन्द करते हैं। फिल्मों में और टी.वी. पर हिंसा, सैक्स, साजिशें...

टकराव और प्रतियोगिता जनित भावनाओं से प्रेरित होने की हम बहुत ऊँची कीमत अदा कर रहे हैं। हमारे नकाब की बजाय वास्तविक हम के साथ सचमुच के लगाव वाले सम्बन्ध बनाने के इच्छुक लोग हमें अप्राप्य लगने लगे हैं। लेकिन एक अच्छा समाचार भी है। मात्र सचेत प्रयास करना है "सुन्दर व्यक्ति" बनने के लिये और तब हम पायेंगे कि दुनियाँ-भर में निस्वार्थी, ध्यान रखने वाले, हमदर्दी से भरे, वास्तव में प्रेम करने वाले लोग बहुत हैं।

– पॉल, अमरीका सरकार के कारागार में बन्दी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स बी-546 नेहरु ग्राउंड फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।